हिन्दी–आलोचना

विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	P1 हिन्दी–आलोचना
इकाई सं. एवं शीर्षक	M1 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि
इकाई टैग	HINDI – P1 M1 (VI SEM.HONS.)
प्रधान निरीक्षक	डॉ० कुसुम राय
प्रश्नपत्र –संयोजक	संयोगिता वर्मा
इकाई –लेखक	संयोगिता वर्मा
इकाई– समीक्षक	डॉ० कुसुम राय
भाषा – सम्पादक	संयोगिता वर्मा

पाठ का प्रारूपः

इकाई–1: पाठ का उद्देश्य

इकाई–2: प्रस्तावना

इकाई–3: आलोचना का अर्थ, परिभाषा

इकाई–4: आलोचना के प्रकार

इकाई–5: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि

पाठ का उद्देश्यः

1) विद्यार्थियों का इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् दक्षता बढेगी।
2) आलोचना के महत्व का प्रतिवादन संभव होगा।
3) विद्यार्थियों के बीच उनकी दक्षता को बढावा मिलेगा।
4) आलोचना के विषय में जानकारी, ज्ञानवर्धन एवं उसके प्रकार, शैली की ज्ञानवर्धक जानकारियॉ प्राप्त होगी।
5) हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि का ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावनाः

आलोचना से तात्पर्य किस वस्तु, विषय की उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण–दोष एवं उपयुक्तता का विवेचन करना है। सामान्यत आलोचना का अर्थ विषय वस्तु के गुण–दोष दोनों पर प्रकाश डालना है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी का आलोचक व्यक्तित्व अन्य आलोचकों की तुलना में इसलिए विशिष्ट हो जाता है कि उनमें एक ओर आचार्यत्व की गरिमा है तो दूसरी ओर गहरी सृजनात्मक ऊर्जा। चिंतन एवं भावुकता का यह दुर्लभ संयोग विरले लेखकों में दिखई देता है। उनका आलोचक व्यक्तित्व मूलतः एक सृजनात्मक व्यक्तित्व है जो अत्यंत जीवंत, सरस एवं गतिशील है। उनमें जो भावप्रवण्ता एवं भावोच्छवास है वह सम्भवतः रवीन्द्रनाथ टैगोर से प्रभावित है। द्विवेदी जी की दृष्टि मुख्यतः शोधपरक तथा ऐतिहासिक–सांस्कृतिक है। यह उनकी आलोचना को क्षतिग्रस्त नहीं करती वरन उसे और भी अर्थवान एवं महत्वपूर्ण बनाती है। वे साहित्य को या साहित्यकार को एक व्यापक ऐतिहासिक–सांस्कृतिक परिदृश्य में रखकर, उस समय के धर्म,राजनीति और लोक जीवन के साथ रखकर उसका विश्लेषण–मूल्यांकन करते थे। वे अपने पुराने ज्ञान को आधुनिक दृष्टि से जोड़ते भी चलते थे। वे अपने पाठक के ज्ञान क्षितिज को विस्तृत करते और व्यापक आयाम देते चलते थे।

आलोचना का अर्थ एवं परिभाषाः

आलोचना शब्द 'लुच्' धातु से बना है। 'लुच' का अर्थ है– देखना। इसलिए किसी भी वस्तु या कृति की सम्यक व्याख्या उसका मूल्यांकन आदि करना आलोचना कहलाती है।

परिभाषाः

डॉ. गुलाब राय के अनुरूपः

''आलोचना का मूल उद्देश्य कवि का सभी दृष्टिकोणों से आस्वाद कर पाठको को उस प्रकार के आस्वाद में सहायता देना तथा उनकी रूचि को परिमार्जित करना एवं साहित्य की गतिविधि–निर्धारित करने में योग्यदान देना''।

डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुरूपः ''साहित्य–क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उनके संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है''।

आलोचना के प्रकारः

मुख्यतः आलोचना के दो प्रकारः–

i. सैद्धान्तिक आलोचना
ii. व्यावहारिक आलोचना

I. सैद्धान्तिक आलोचना

सैद्धान्तिक आलोचना में साहित्य के सिद्धान्तों पर विचार होता है। ये सिद्धान्त शास्त्रीय भी हो सकते है और ऐतिहासिक भी।

व्यावहारिक आलोचनाः जब सिद्धान्त के आधार पर साहित्य की समीक्षा की जाए, तो उसे व्यावहारिक आलोचना का नाम दिया जाता है।

II. व्यवहारिक आलोचना के प्रकार :

1) व्याख्यात्मक आलोचना
2) जीवनचरितात्मक आलोचना
3) ऐतिहासिक आलोचना
4) रचनात्मक आलोचना
5) प्रभाववादी आलोचना
6) तुलनात्मक आलोचना

द्विवेदी जी ने मुख्यतः चार बातों में बल दिया –

1) हिन्दी साहित्य को सम्पूर्ण भारतीय साहित्य से सम्बन्ध करके देखा जाय।
2) हिन्दी साहित्य के माध्यम से व्यक्त चिन्ताधारा को भारतीय चिन्ता के स्वाभाविक विकास के रूप में स्वीकार किया जाय।
3) हिन्दी–साहित्य को ठीक से समझने के लिए मात्र हिन्दी ग्रन्थों पर निर्भर न रहकर जैन और बौद्ध, अपभ्रंश साहित्य,काश्मीर के शैवों तथा दक्षिण और पूर्व के तांत्रिकों का साहित्य, नाथ योगियों का साहित्य ,वैष्णव आगम, पुराण, निबन्ध–ग्रंथ तथा लौकिक कथा साहित्य यह सब कुछ देखा–परखा जाय।
4) साहित्य के इतिहास को जनचेतना के इतिहास के रूप में व्याख्यायित किया जाय।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टिः–

1) आचार्य द्विवेदी शुक्ल संस्थान के आलोचक होने के बावजूद अपने मानवतावादी दृष्टिकोण और ऐतिहासिक पद्धति के कारण शुक्ल से अलग है। हिन्दी साहित्य की भूमिका में उन्होनें पहली बार आलोचना की ऐतिहासिक पद्धति की प्रतिष्ठा की।

2) कबीर के नये मूल्यांकन में हजारी प्रसाद द्विवेदी की आधुनिकतावादी दृष्टि का भी पर्याप्त योगदान रहा । उन्होनें कबीर को सामाजिक,सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक नैरन्तर्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का सफल प्रयास किया।उन्होनें ही कीबर को ''वाणी का डिक्टेटर'' भी कहा।

3) द्विवेदी जी का आधुनिक दृष्टिकोण और नवीन मानवतावाद रवीन्द्रनाथ टैगोर के मानवतावाद से प्रभावित था। द्विवेदी जी का मानवतावाद आर्दशवादी मानवतावाद है जो यर्थाथ की दृष्टि से सम्पन्न है। इसलिए उन्हें न तो शुद्ध रोमान्टिक कहा जा सकता है न तो शुद्ध यर्थाथवादी हिन्दी साहित्य में सूर, तुलसी की आलोचना और प्रेमचंद का आकलन उन्होनें मानवतावादी दृष्टि से किया।

   इनके समीक्षा ग्रन्थ निम्न हैः–

   i. सूर साहित्य–1930
   ii. हिन्दी साहित्य की भूमिका–1940
   iii. कबीर–1942
   iv. हिन्दी साहित्य का आदिकाल–1932
   v. सहज साधना–1963 आदि।

4) द्विवेदी जी साहित्य का लक्ष्य मनुष्य का हित साधना करना मानते है और 'कला कला के लिए' के सिद्धान्त के समर्थक नहीं है।उनका इतिहासकार रूप उनके समीक्षक रूप में इस प्रकार फल मिल गये है कि उन्हें परस्पर पृथ्क् करके अध्ययन सम्भव नहीं है। उनके आलोचनात्मक साहित्य को दो भागों में बॉटा गया हैः–

   i. इतिहास सम्बन्धी
   ii. समीक्षा सम्बध्धी

5) द्विवेदी जी की शैलीः– द्विवेदी जी की शैली की अगर बात करें तो उन्होनें सर्वत्र वर्णनात्मक शैली का ही प्रयोग किया है। इसके साथ ही उन्होनें विवेचनापूर्ण शैली में भी आलोचनाएँ लिखी है । विषय के प्रतिपादन के लिए विभिन्न उद्धरण भी प्रस्तुत किया है। उनकी आलोचना शैली का एक और रूप भावात्मक है जिसमें किसी कवि की विशेषताओं की प्रशंसा की है। उन्होनें सांस्कृतिक गतिविधि,

लोकजीवन आदि के बीच के साहित्य का परीक्षण करने की जिस वैज्ञानिक पद्धति को जन्म दिया उसके लिए हिन्दी समीक्षा उनकी चिर ऋणी रहेगी। द्विवेदी जी सिद्धान्तों के नियामक और साहित्य स्रष्टा दोनों थे। 'साहित्य का साथी' तथा 'साहित्य का मर्म' यदि उनकी आलोचना पद्धति के निदर्शक बने तो :–

i. वाणभट्ट की आत्मकथा
ii. चारूचन्द्र लेख
iii. आशोक के फूल
iv. कुटज आदि ग्रन्थ उनके श्रेष्ठ रचनाकार होने के प्रमाण है

निष्कर्षः–

हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि ऐतिहासिक–सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित है। उन्होनें साहित्य की विकास परम्परा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझा है। परम्परा के प्रति उनका आग्रह किसी भी रूप में गतिहीनता का द्योतक नहीं है। प्राचीन रूढियों एवं विगलित परम्पराओं का परित्याग करते हुए विकसित होने वाली इतिहास दृष्टि वस्तुतः साहित्य की गतिशीलता और भविष्योन्मुखता का परिचायक है। एक इतिहास लेखक के रूप में हजारीप्रसाद द्विवेदी भारतीय संस्कृति और साहित्य की लोकोन्मुख क्रान्तिकारी परम्परा के प्रतीक है। उनका साहित्येतिहास लेखन अतीत की व्याख्या मात्र नहीं है, बल्कि व्यापक सांस्कृतिक उन्मेष को समझने का एक माध्यम है। द्विवेदी जी इतिहास को एक अविरल–अविच्छिन्न धारा के रूप में देखते हैं। लोक–चिन्ता की गहरी समझ ने द्विवेदी जी के इतिहासबोध को मानवतावादी आधार प्रदान किया है, जिसकी सहायता से वे साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्त मनुष्य और उसकी चेतना के विकास को सही सन्दर्भ में देख सकने में सक्षम सिद्ध हुए हैं।